शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 अप्रैल 2016
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

समकालीन कहानियों में ग्रामीण समाज की झलक

डॉ.वंदना अग्निहोत्री
विभागाध्यक्ष - हिन्दी विभाग
माता जीजा बाई शासकीय कन्या स्नातकोत्तर महाविद्यालय
इन्दौर, मध्यप्रदेश, भारत

शोध संक्षेप

समकालीन कहानियाँ अपने समय से प्रभावित कहानियाँ हैं। दिक् या परिवेश में जीवित, वास्तविक व्यक्तियों की ओर उन्मुख होकर ये कहानियाँ अपनी परिणति में वर्तमान काल का बोध और स्पंदन जगाती है। इसलिएइन्हें समकालीन कहा जाता है। समकालीन कहानी में वर्णित घटनाओं , परिस्थितयों का जो प्रत्यय पाठक में उत्पन्न होता है वह पूर्ववर्ती कहानियों से नहीं। समकालीन कहानियों में आम आदमी के चेहरे को साफ-साफ देखा जा सकता है। मनोगतियों की भिन्नता के कारण इस चेहरे के अनुभव बदलते हैं। लेकिन इन सभी चेहरों में एक बात सामान्य है- स्थिति की प्रतिकूलता का अहसास। प्रतिकूल परिस्थितियों में घिरे हुए आदमी की कहानी समकालीन कहानी है। प्रस्तुत शोध पत्र में समकालीन कहानियों में ग्रामीण समाज' पर विचार किया गया है

प्रस्तावना

नव धनाढ्य हुए समूहों के अहंकार युक्त प्रदर्शन से और अकिंचनता के एहसास ने आम आदमी के मन में घृणा की भावना तीव्र कर दी है। ईर्ष्या और घृणा अत्यन्त स शक्त भावनाएँ हैं, जो आदमी को अन्त में हिंसा की ओर ले जाती हैं। विचारधाराएँ इस आदिम भाव शक्ति को दिशाएँ और संगठन का स्वरूप देती हैं। लेकिन लक्ष्य करने योग्य तथ्य यह है कि समकालीन कहानीकार विचारधारा से बचाता है। उसके उद्वेलित और क्षुब्ध मानस में , वास्तविकता का साक्षात्कार करते समय अथवा अभिव्यक्ति के क्षण में कोई कारण-कार्य का क्रम का दिखाई नहीं पड़ता , वह वास्ताविकता को जैसा महसूस करता है, व्यक्त कर देता है। सीधे-सपाट लहजे में वह ' बाढ़ ' और ' बरगद ' में वास्तविकता को रूप देता है। ग्रामीण समाज को अपनी कहानियों का मुख्य धरातल बनाने वाले कथाकरों में शिवप्रसादसिंह मार्कण्डेय , मधुकर गंगाधर और फणीश्वरनाथ रेणु के नाम सर्वोपरी है। फणीश्वरनाथ रेणु की ' तीसरी कसम ' और मधुकर गंगाधर की बरगद में ग्रामकथा का स्परूप दिखाई देता है।

समकालीन कहानी और ग्रामीण समाज

मानव मन की भावनाओं को व्यक्त करनेवाली कहानी ' तीसरी कसम ' है जिसमें रेणु ने बताया है कि एक गरीब ग्रामीण जो मन से बहुत सरल है उसकी स्त्रियों के प्रति कोमल भावनाएँ है। किन्तु जब इन कोमल भावनाओं को कठोर आघात लगते हैं, तब एक अलग ही गीतात्मक स्थिति बन जाती है। कोमलता एवं भोलापन जैसी भावनाएँ अब कहीं दिखाई नहीं देती हैं। आधुनिक जीवन को जीनेवाला आज का मानव इतनी जटिलताओं से घिरा है कि स्वंय ही उनसे उबर नहीं पाता। ऐसे में वह किसी अन्य का सहयोग भी नहीं कर पाता केवल प्रतियोगिता

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 अप्रैल 2016
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

करके एक - दूसरे से आगे बढ़ जाना चाहता है - "आधुनिक जीवन के जटिल दबावों से आदमी उपभोग की संस्कृति में एक-दूसरे का सहयोगी नहीं प्रतियोगी है। " 1 जब नगरों की ऐसी महत्वकाक्षाओं से परिपूर्ण जीवन- शैली विकसित हो रही हो। तब रेणुजी की कहानी 'तीसरी कसम ' गाँव के प्रकृति - पुत्र शुद्ध मनुष्य का नमूना प्रस्तुत करती है।

'बरगद ' कहानी में गाँवों में फैले अपराध, बरबादी और हिंसात्मक वातावरण का उल्लेख किया गया है। यह कहानी नयी कहानी की ग्रामीण अंचल से निकली एक शाखा प्रतीत होती है। 'बरगद ' के माध्यम से ग्रामीण जीवन के बदलते परिद्दश्यों का अंकन किया गया है। कहानी में प्रेम त्रिकोण बनता है परन्तु वह स्वाभाविक ही लगता है। रानी और रानी के पिताजी की हत्या हो जाती है रानी का पति और प्रेमी दोनों गिरफ्तार हो जाते हैं। जिस तरह से प्रकृति में परिवर्तन होते है बसंत और पतझड़ आते हैं। वृक्षों के पुराने पत्ते झड़ जाते है और नवीन पत्ते आ जाते हैं। उसी तरह मानव के जीवन में सुख-दुःख आते रहते हैं। मनुष्य परिस्थितियों के अनुसार पाप और पुण्य दानों करता रहता है। 'बरगद ' में बताया है कि समय बीतने पर बरगद में फिर से नई कोपलें निकलती है। वह मनुष्य के पाप से मुक्त हो जाता है। कहानी के अन्त में उसकी समकालीनता प्रगट होती है। "पूरे बारह वर्षों बाद बरगद की फुनगी पर पक्षी बैठे हैं। बरगद के नीचे भूदान की जमींन पर एक छोटी सी झोपड़ी है, जिसकी दिवारों पर इन्दिरा गाँधी और अटल बिहारी बाजपेई की तस्वीरों वाले आदमकद पोस्टर है, जिन पर नए समाजवाद और नए राष्ट्रवाद के नारे छपे हैं और जिनकी छाया के तले फटे हुए कंथा पर तीन दिन का एक नन्हा सा इन्सान पड़ा है जो अपनी मुठ्ठियों को बार-बार हवा में उछाल रहा हैं।"2

मानव का मानव के प्रति संवेदनाओं का अभाव अब गाँवों की विशेषता बन गई हैं। 'बरगद ' में ग्रामीण वातावरण को रोमानी आँखों से नहीं देखा गया है। उसके नारकीय वातावरण को छिपाने का प्रयास नहीं किया गया है। उसका अंकन किया गया है। यथार्थ कितना भयानक है , बरगद का वृक्ष इसका साक्षी है। वह वृक्ष मौन रहकर इन भयानक स्थितियों को देखता रहता है , सब सहन करता है। ऐसा लगता है वह अभिषप्त हो गया है।

धीरे-धीरे परिवर्तन की लहर गाँवों तक भी पहुँचने लगती हैं और बरगद भी शापमुक्त होने लगता हैं। बच्चे की लाल कोमल हँथेलियाँ जो हवा में उछल रही है वे आने वाले समय की प्रतीक हैं। हमारे गाँव बहुत पिछड़े हुए है और अभावों से अभिषप्त भी है। उनके अभावों का अभिशाप कौन समाप्त करेगा कोई नहीं जानता ।

"बरगद भी शाप मुक्त हो रहा है, और भविष्य के प्रतीक बच्चें की लाल-लाल हँथेलियाँ हवा उछाल रही है। हमारे गाँव 'बरगद ' की तरह ही हैं। उनकी जड़ें गहरी है पर वे पिछड़ेपन और अभावों से अभिशप्त हैं। इन्दिरा गाँधी और बाजपेई के पोस्टर इस अभिशाप को अभी तक दूर नहीं कर सके है। वे शहरों में उलझ गए है और 'बरगद ' में अभी तक सिर्फ किसलय फूटे हैं। कौन जाने , वें कहीं फिर न सूखा दिये जायें।"3

ग्रामीण परिवेश को प्रस्तुत करने वाली मधुकर जी की 'बाढ़ ' कहानी भी है। इसमें नौकर शाही पर चोट की गई है। स्कूल में मास्टरनी की नौकरी पाने के लिए भगवती बाढ़ की परवाह भी नहीं करती, बाढ़ में ही जाती है। चपरासी के मदद करने पर वह वहाँ नौकरी प्राप्त कर लेती है।

किन्तु यहाँ तक पहुचँने के उसके अनुभव संत्रास से परिपूर्ण थे।

मधुकर सिंह मधुकर गंगाधर की तरह प्रतीक नहीं चुनते और न ' नए कहानीकारों की तरह , स्थितियों और मानसिकताओं में गहरे उतरते है , वह चुटीली शैली में आम आदमी की तकलीफों का ब्यौरा देते हैं। बीच-बीच में स्थिति पर टिप्पणी भी करते चलते है। "उफ् प्रकृति और आदमी की निर्दयता में क्या फर्क है ? अधीक्षक आफिस का बड़ा बाबू आदमी नहीं , प्रकृति है। चिट्ठी पाने में कितनी परेशानी हुई बाप रे।" 4

मधुकर जी सत्य को बताना चाहते है वे कलात्मकता की चिन्ता नहीं करते और इसी कारण कहानी वक्तव्य में बदलने लगती है। अधिक कारीगरी से सत्य की प्रखरता कम हो जाती है।, इसलिए वह सपाट शैली अपनाते है "भगवती को नींद नहीं आ रही। ताकत से जीने के लिए विवाह जरूरी है भगवती के लड़का भी होगा तो ऐसा नहीं, जो बाबा उपमादास बन सके। उसका लड़का आफिस के जानवरों को खत्म करेंगा , खुशी के मारे भगवती को नींद नहीं आरही थी।" 5

'बाढ़' में मधुकर सिंह ने सपाट कथा शैली को अपनाया है इस कारण पात्र चिंतन के सूत्र में उलझते नहीं हैं। एक के बाद एक घटना घटित होती चली जाती है और कहानी ' रिपोतार्ज की शक्ल लेने लगती है। उनकी कहानी में भले ही कुछ कमियाँ हो पर राजनैतिक चिंतन भी महत्वपूर्ण है। "कहानी कला में कमजोरियाँ हाने पर भी मधुकर सिंह की राजनैतिक चेतना की प्रखरता ध्यान खींचती हैं।"

"नई कहानी में शायद एक भी कहानी ऐसी न मिलेगी , जिसमें कोई औरत अपने पुत्र की भूमिका के विषय में कोई निर्णय ले कमलेश्वर ने लिखा है कि उनकी कहानियों में उनके निर्णय है। लेकिन वे निर्णय ऐसे हैं। (यदि उन्हे निर्णय कहा जासके) जिनसे कोई विशेष अन्तर नहीं पड़ता।"6 बाढ़ कहानी के पात्र एक - दूसरे की सहायता करते है। भगवती की सहायता चपरासी करता है, और उसकी औरत भगवती को बेटी बना लेती है। समकालीन कहानी में स्वीकार किया गया है कि जीवन यदि कठोर है , कर्कश है तो उसे उसी रूप में दिखाना चाहिए। कुछ वर्षों में कहानी के वर्ण्य विषयों में अन्तर आया है और यर्थाथ के प्रति एप्रोच और पहुँच में भी।

प्रेतमुक्ति कहानी में शैले श मटियानी ने ग्राम - जीवन को उकेरा है। सर्वण हिन्दुओं का प्रतिनिधि पात्र है , केवलानंद पाण्डे और सर्वहारा वर्ग का प्रतिनिधि पात्र है किसनराम। दोनों के मन में एक-दूसरे के लिए जगह है। वर्ण और धर्म के संस्कार बहुत प्रबल होते हैं , मगर मानव संवेदना नित्य प्रति के व्यवहार में पाण्डे को उदार बनाती है। किसनराम धीरे-धीरे किस प्रकार टूटता जाता है इसका वर्णन कहानीकार ने पूरे ब्यौरे के साथ किया है। उनकी निरीक्षण शक्ति पाठकों को संतुष्ट करती है। अपने संस्कारों से ग्रस्त मन से पांडेजी किस तरह लड़ते हैं। यह भी कहानी को भरा-पूरा बनाता है। दोनों पात्रों का मानस चित्र स्वाभाविक ढंग से रचा गया है " पाण्डे जी भी जानते थे कि किसनराम का तर्पण उनके लिए शास्त्र विरूद्ध और निषिद्ध है उसे आश्वस्त करने का एकमात्र उपाय ही यह रह गया था, सो उन्होंने कह दिया था कि जाति तो सिर्फ मिट्टी की होती है। मिट्टी छूट जाने पर सिर्फ आत्मा रह जाती है, और आत्मा अछूत नहीं होती। इस समय बड़ी दुविधा हो गई कि कहीं किसनराम सचमुच मर गया होगा तो क्या वह अपना वचन पूरा कर सकेंगे ? मन ही मन पांडे जी प्रार्थना करते जा

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 अप्रैल 2016
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

रहे थे कि किसनराम मरा न हो। शैलेश मटियानी ने अंतर्द्वंद्व द्वारा मानव की द शा का दर्शन कराया है। "यह विधि प्रसाद और प्रेमचंद ने भी अपनाई थी। शैलेश का पात्र - अंतर्द्वंद्व, पात्रों के जीवन संदर्भ के अनुरूप होता है , यही प्रवृत्ति उन्हें आरोपित अंतर्द्वंद्व वाले पात्रों से भिन्न करती है।"7 शैलेश कभी अतिरंजना नहीं करते। इससे प्रेतमुक्ति ' ग्राम और ग्रामीणों की मानसिक अवस्थाओं की प्रतिबिम्ब बन जाती है। शैलेश ने बिना नवीन तकनीक का प्रयोग किए कथ्य की शक्ति से कहानी को सफल बना दिया। वे कल्पना में भी वास्तविक प्रसंग का अतिक्रमण नहीं होने देते, "उन्हें लग रहा था कि किसनराम की प्रेतमुक्ति हो गई लेकिन पश्चाताप का प्रेत उनसे चिपट गया है ... उन्हें लगा कि ... उनका अपना ही प्रेत लटका हुआ है। .... किसनराम दूसरे रास्ते से आता हुआ पांडेजी को देखकर रूक गया ... महाराज कहते हुए, दण्डवत् में झुका, बीच सिर में जहाँ बाल नहीं रह गए थे, पसीने की बूँदे ठीक ऐसे ही चमक रही थी , जैसे जौ-तिल वाली थाली में पानी की बूँदें बिखरी हुई हो ... और जीता रह कहने को हाथ उपर उठाते हुए पांडेजी को ऐसा लगा जैसे वे आसमान में लटके हुए किसी प्रेत को नीचे गिरा रहे हो "8
'प्रेत-बिम्ब' की प्रस्तु ति में यदि वे चाहते तो अतिकल्पना का प्रयोग कर सकते थे लेकिन पसीने की बूँदों के लिए भी थाली में पानी की बूँदों पर ही उनका ध्यान सीमित रहा इसी स्वाभाविकता के कारण ग्रामीण अंचलो का जीवन शैलेष में प्रामाणिक रूप से मिलता है।

निष्कर्ष

समकालीन कहानी के गोपन द्रोह के पीछे कहानीकार की व्यक्तिगत और सामाजिक असंतुष्टि है। आज का कहानीकार अग्रजों की तुलना में एक गुस्सेल लेखक है। गुस्से में रूढ़ियाँ शिष्टाचार मर्यादाएँ जो अंतर्विरोधों को छिपाकर रखती है। धीरे-धीरे टूट रही है। वर्तमान व्यवस्था की स्थापित मान्यताओं और मर्यादाओं का ध्वन्स ही समकालीन कहानी का मुख्य स्वर है और यह स्वर अपने तीखेपन के कारण सर्वथा भिन्न लगता है। 'बाढ़ ' और ' बरगद ' में यर्थाथ जीवन का कड़वापन है। प्रेतमुक्ति में संस्कारों के खिलाफ लड़ाई है। उसमे अंधवि श्वास को नकारा गया है। 'बाढ़ ' और बरगद में राजनैतिक व्यवस्थाओं को नकारा गया है। समाजिक विषमता ' बाढ़ ' में भगवती को दयनीय स्थिति में डालती है, बारहसिंघों को मोटा ताजा बनाती है और बरगद के किसलिय को सुखा देती है।

संदर्भ ग्रन्थ

1, 3, 6 , 8 समकालीन साहित्य की भूमिका , डॉ. विश्वम्भरनाथ उपाध्याय पृष्ठ 322,323,324,325
2 बरगद, मधुकर गंगाधर
4, 5 बाढ़, मधुकर सिंह
7,9 प्रेतमुक्ति, शैलेश मटियानी
कहानी ! नई कहानी, डॉ.नामवरसिंह